c. अनु reordari. N. 11.24.: माम् अनुस्मृत्य; 15.16.
c. वि oblivisci. Dr. 7.11.: ना ऽयं वैरं विस्मरते कदाचित्; Ragh. 19.2. — *Etiam* recordari. Sa. 5.6. *nisi c. ed. Calc.* pro विस्मरन्ती legendum विमृशन्ती.
c. सम् recordari. N. 14.24.: संस्मर्तव्यस् तदा ते ऽहम्.
c. सम् praef. अनु *id.* N. 15.16.
c. सम् praef. अभि *id.* Mah. 3.15758.

स्मृति *f.* (r. स्मृ s. ति) memoria. Bh. 2.63.

स्यन्द् 1. *A.* (scribitur स्यद्, gr. 110[a].) 1) fluere. Rigv. 32. 2.: स्यन्दमाना अञ्जः समुद्रम् अवजग्मुर् आपः; Mah. 1.3990.: स्यन्दते ... सरिच्छ्रेष्ठा. 2) currere. *Part. praes. par.* N. 13.10.: स्यन्दताम् अपि नागानाम्. *V. sq.*

स्यन्दन *m.* (r. स्यन्द् s. अन) 1) currus. N. 8.20. 2) nomen arboris (Dalbergia ougeiniensis). N. 12.3.

1. स्यम् 6. et 10. *P.* स्यमामि, स्यमयामि (ध्वनने) sonare.

2. स्यम् 10. *P. A.* स्यामयामि, °ये (वितर्के) cogitare, considerare.

स्रंस् 1. *A.* cadere, decidere. Bh. 1.30.: गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्. — *Caus.* commovere. Ragh. 6.75.: वातो ऽपि ना ऽस्रंसयद् अंशुकानि (schol. अकम्पयत्). *Cf.* भ्रंस्, भ्रंश्, ध्वंस्.
c. वि *i. q. simpl.* विस्रस्त delapsus. A. 10.64.

स्रंभ् 1. *A.* (विश्वासे) confidere, securum esse. *Cf.* स्रम्भ्.

स्रक्, स्रग् v. स्रज्.

स्रग्विन् (a स्रज् s. विन्) sertatus.

स्रङ्क् 1. *A.* (गत्याम्, scribitur स्रक्) ire, se movere. *Cf.* अङ्क्, अङ्ग्, श्लङ्क्.

स्रज् *f.* (ut videtur, a r. सृज्, v. gr. 34[b].) sertum e floribus. N. 5.28.

स्रम्भ् v. श्रम्भ्.

स्रव *m.* (r. स्रु fluere s. अ) 1) actio fluendi, stillandi. 2) liquor, liquidum, gutta. H. 2.9.

स्रष्टुम् v. सृज्.

स्रिभ्, स्रिम्भ् 1. *P. i. q.* सृभ्.

स्रिव् 4. *P.* स्रीव्यामि (शोषे गतौ) siccari, ire.

स्रु 1. *P.* (scribitur etiam श्रु) ire, fluere. Mah. 1.5081.: सुस्राव रेतो ऽस्य; 2.2592.: स्रवन्नेत्रजलाविला; R. Schl. II. 63.18.: स्रोतांसि विमलान्य् अपि सुस्रुवुर् (*) गिरिधातुभ्यः; 40 34.: सुस्राव नयनैः स्त्रीणाम् अश्रम्. *trop.* Mah. 1.5329.: तुमुला वाचः सुस्रुवुः. — स्रुत fluens. Man. 4.122.: रुधिरे स्रुते गात्रात्. 2) effundere. Mah. 1.1485.: सुस्रुवुः शोणितम् बहु; 3.11118.: शकृन्मूत्रं सुस्रुवुर् भयात्. 3) diffluere, solvi, perire. Man. 2.74.: स्रवत्य् अनोङ्कृतम्. *Etiam A.* Mah. 3.14767.: स्रवेत. — *Caus.* effundere. Man. 4.169. (Cf. स्नु, gr. ῥέω e σρέϝω, ῥεύ-σω, ῥεῦ-σις, ῥεῦ-μα cet., lith. *sraw-ju* sanguinem mitto; hib. *sruth* f. «a stream, current, defluxion»; germ. vet. *sliu-mo* velociter, *sliumor* citius, nostrum *schleunig*, v. स्नु et Graff 6. 848.; lat. *riv-us, ruo.*)
c. निस् effluere, emanare. *Caus.* facere ut quid effluat. Mah. 3.13164.
c. परि *i. q. simpl.* R. Schl. II. 30.24.: वारि ... नेत्राभ्याम् परिसुस्राव. *Vid.* परिस्रव.
c. प्र 1) profluere, fluere. N. 24.15.: वारि नेत्राभ्याम् असुखम् प्रास्रवत्. 2) facere ut quid fluat, effundere. H. 2.8.: भक्तयो ऽयम् मम सुप्रियः स्नेहस्रवान् प्रस्रवति; R. Schl. II. 48.13. — *Absol.* Hit. 1.22.: मातुः प्रस्रवतः स्तनौ. — प्रस्रुत profluere faciens, effundens. R. Schl. II. 85.18.: प्रस्रुतः सर्वगात्रेभ्यः स्वेदं ... यथा ... हिमवान् प्रस्रुतो हिमम्.
c. वि 1) fluere. विस्रुत fluens. R. Schl. I. 34.9.: नदी रम्या मगधान् विस्रुता. 2) effundere. Mah. 3.825.: स ... विस्रवत्य् असृग् उल्बनम्.

स्रुच् *f.* cochlear sacrificale. Dr. 6.20.

स्रोत *n.* (ut videtur, e स्रोतस् abjecto स्) *i. q.* स्रोतस्. N. 16.14. *in fine comp. bah.*

स्रोतस् *n.* (a r. स्रु s. अस् inserto त्) flumen, cursus. H. 1. 2. Bh. 10.31.

(*) Schlegelius hanc radicem ubique scribit श्रु, inde शुश्रुवुः pro सुस्रुवुः.